रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २३: गुरु चेला (मुर्शद और अभिलाषी)

'गुरु चेला', 'मुर्शद और अभिलाषी', यह बुलंद पर्यवेक्षक द्वारा मिश्रित और वितरित किया गया उत्तम अमृत है। गुरु नानक रूहानी ज्योत आगे बढ़ाने के लिये अपने संगी को तैयार करते हैं।

तेरा कवण गुरू जिस का तू चेला ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

तेरा गुरु कौन है? तू किसका चेला है?
(राग रामकाली, गुरु नानक)

गुरु नानक इलाही विवेक का इज़हार हैं। गुरु नानक किस गुरु की लालसा करते हैं और वह किसके चेले हैं?

सबद गुरू सुरत धुन चेला ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

विवेकी इज़हार (सबद) गुरु है। सचेत आत्म पड़ताल चेला है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक कहते हैं विवेकी इज़हार सबद गुरु है और इंसान की सुरत दवारा तत्व पर सचेत आत्म पड़ताल चेला है।

वर्षों तक सुदूर इलाकों की चिरस्मरणीय उदासियों के बाद गुरु नानक ने किसान के तौर पर चरवाहों वाली जगह पर बसने का मनसूबा बनाया। उनकी इच्छा थी कि परिवार की देख-भाल करें और बाकी ज़िंदगी अपनी मेहनत की कमाई दूसरों में बांटने में व्यतीत करें। इस दौरान वह अपने तजुर्बों का ज्ञान भी समाज में बांटते रहें।

एक उपयुक्त स्थान की तलाश में गुरु नानक और भाई मरदाना ने अपने गांव तलवंडी जो अब ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है, के उत्तर की ओर का सफ़र किया और रावी नदी के किनारे एक शांत जगह का चुनाव किया। 'सिहां उप्पल जन्मसाखी' के अनुसार, इस स्थान का नाम जम्मनवाली था और गुरु नानक के दौर में इसका नाम बदलकर करतारपुर कर दिया गया था।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम ननकाना साहिब से करतारपुर जा रहे हैं जो इंडिया-पाकिस्तान की सरहद के पास है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने अपनी ज़िंदगी के आख़िरी अठारह वर्ष रावी नदी के किनारे बिताये। यहां गुरु नानक ने अपने फ़लसफ़े के तीन बुनियादी असूलों का प्रचार किया, 'किरत करो', 'बांट कर खाओ' और 'नाम जपो'।

‘किरत करो’ का अमल ईमानदारी से कर्मों के रास्ते अपने और दूसरों के भले के लिये कमाई करना है।

'बांट कर खाने' का अर्थ है, अपनी नेक कमाई को दूसरों के साथ साझा करते हुये उपयोग करना, चाहे कमाई पदार्थ के रूप में हो या रूहानियत के रूप में।

'नाम जपो' की तरकीब ही आत्म पड़ताल है जो मनुष्य के अपने और समाज के विकास में मदद करती है।

बिरादरी का इत्तेफ़ाक मानव और आर्थिक विकास में बढ़ोतरी करने की बुनियाद बनता है जिसके साथ कायनात भी सेहतमंद रहती है। सामाजिक बराबरी में सहायक होने वाली सोच ही गुरु नानक की तर्ज़-ए-ज़िंदगी थी। उनके अनुयायियों ने रावी के किनारे इकट्ठा होना शुरू कर दिया। भाई गुरदास ने अपनी वारों में उस बिरादरी के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम दर्ज कीये हैं: तारू पोट्टू, मूला कीड़, पिरथा, खेड़ा, पिरथी मल्ल सहगल, रामा डीडी, मालो, मांगा, कालू, भगता ओहरी, सिहां उप्पल, जिता रंधावा, बूडा बुढ़ा, फिरना खैरा, जोध, जीवाई, गुज्जर लोहार और नाई धिंझ।

उनके पैरोकारों ने स्वयं को 'सिख' कहना शुरू कर दिया जिसका मायने सीखने वालों से था और जम्मनवाली को करतारपुर कहना शुरू कर दिया, जो दो शब्दों के जोड़ से बना है, करतार का मायने हाज़रा-हज़ूर है और पुर का मायने बसना है।

साझे हितों से जुड़े जीवों के संयोजन से बिरादरी बनती है जो अपने ख़्यालों के अदान-प्रदान और सोच की साझ के लिये भाईचारा बांधते हैं। सामाजिक संबंधों, रिश्तों, रूहानियत और सामाजिक कल्याण सभी आपस में जुड़े हुये हैं। गुरु नानक दुनियावी रिश्ते को गुणों से जोड़ते हैं। उन्होंने मां के तौर पर विवेक की परवरिश करने, पिता के तौर पर संतोश को मन में बसाने और हमसाया के तौर पर सच से दोस्ती करने की सलाह दी।

माता मत पिता संतोख ॥
सत भाई कर एहु विसेख ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

विवेक को मां, संतोष को पिता और सच को हमसाया बनाओ। यही आपके साथ वफ़ा करने वाले रिश्ते हैं।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुर नानक के पैरोकारों की रावी नदी के पूर्वी तट पर बढ़ोतरी होने लगी, जिसे पख्खोके रंधावा कहते हैं। करतारपुर से गुरु नानक अक्सर रावी नदी पार करते थे और पख्खोके रंधावा जाते थे।

इंडियन उपमहाद्वीप में उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे के दौरान रैडक्लिफ़ लाइन से साथ रावी के पूर्वी और पश्चिमी किनारों को विभाजित किया गया, जिससे पख्खोके रंधावा इंडिया में आया और करतारपुर पाकिस्तान का हिस्सा बन गया।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद को तय नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये गुरु नानक की यादों से साथ सांझ कायम करने के लिये हम रावी नदी के पूर्व की ओर जाने के लिये वाघा सरहद के रास्ते से इंडिया में डेरा बाबा नानक जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: रावी नदी के पूर्व की ओर गांव पख्खोके रंधावा का नाम बदलकर गुरु नानक के नाम पर डेरा बाबा नानक कर दिया गया है।

माना जाता है कि डेरा बाबा नानक का नाम गुरु नानक के पोते और लखमी चंद के पुत्र धर्म चंद ने रखा था।

पख्खोके रंधावा गुरु नानक की पत्नी माता सुलखनी का मायका था। गुरु नानक अपने ससुर साहिब को मिलने के लिये पख्खोके रंधावा जाते थे जो राजस्व विभाग में अधिकारी थे।

हम डेरा बाबा नानक में गुरुद्वारा दरबार साहिब जा रहे हैं जो गुरु नानक की याद में रावी नदी के पूर्वी तट पर बना हुआ है।

यह दिलचस्प है कि हैदराबाद रियासत के निज़ाम के वज़ीर दीवान चंदू लाल ने अठारहवीं शताब्दी में गुरु नानक की याद में बने इस गुरुद्वारे के निर्माण में अहम योगदान दिया था। चंदू लाल वहीं व्यक्ति हैं जिन्होंने गुरु नानक के संदेश को दक्षिण इंडिया में फैलाने के लिये उन्नीसवीं शताब्दी में गुंटूर, हैदराबाद, कांचीपुरम, रामेश्वरम, तिरुचिरापल्ली और तिरुवन्नामलाई में मठ बनवाये थे।

डेरा बाबा नानक से हम पाकिस्तान के करतारपुर गांव को देख सकते हैं।

बंटवारे के बहत्तर साल बाद दो हज़ार उन्नीस में इंडिया के डेरा बाबा नानक और पाकिस्तान के करतारपुर के बीच लगभग 5 किमीटर लंबा गलियारा बनाया गया ताकि इस रास्ते इंडिया के श्रद्धालु पाकिस्तान में करतारपुर साहिब गुरुद्वारे के दर्शन करने के लिये जा सकें।

'जन्मसाखी' लेखों में दर्ज है कि पख्खोके रंधावा के एक जागीरदार अजिता रंधावा ने ' धर्मशाला' बनवाने के लिये धन इकट्ठा किया था जहां आने वाली संगत को गुरु नानक विवेक बांटते थे। ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में यह दर्ज नहीं है कि यह ' धर्मशाला' रावी नदी के कौन से तट पर बनाई गई थी।

गुरु नानक की दूसरी उदासी के दौरान लाहौर में मुलाकात के बाद दुनी चंद उनके पैरोकार बन गये थे। उन्होंने आने वाली संगत के लिये रावी नदी के तट पर विश्राम घर बनवाया।

हम गुरुद्वारा चोला साहिब जा रहे हैं जहां इस्लामी आयतों वाला चोला नुमाइश में लगा हुआ है।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही कथा के मुताबिक बग़दाद के एक श्रद्धालु ने यह चोला गुरु नानक को तोहफे के तौर पर दिया था जिस को अट्ठारह सौ अट्ठाइस में स्थानीय वासी काबली मल्ल द्वारा डेरा बाबा नानक गांव लाया गया था। जन्मसाखी लेखों में बग़दाद में गुरु नानक को तोहफ़े में चोला मिलने का ज़िक्र नहीं आता।

मैं इस चोले को गुरु नानक के प्रति सभी मज़हबों के लोगों के प्यार और सत्कार के तौर पर देखता हूं, जिन्हें गुरु नानक ने फ़लसफ़े के विवेक के व्यवहारी चोगे से नवाजा।

वह 'मिरासी बिरादरी से थे जिनकी पृष्ठभूमि अरबी लफ़्ज़ 'मरास' से जुड़ती है जिसका मायने विरासत है। भाई मरदाना की सबसे बढ़िया पहचान एक लामिसाल इंसान के तौर पर हो सकती है जिन्हें 'संगत' का सत विरासत में मिला। 'संगत' शब्द का मूल संस्कृत के शब्द 'संघ' से जुड़ता है जिसका मायने साथी होना है। गुरु नानक के वहदत के संदेश का प्रचार करने के लिये भाई मरदाना ने उनका ईमानदारी से साथ निभाया।

रूहानी आज़ादी हासिल कर लेने के कारण भाई मरदाना में अपने प्रति मान्यता की लालसा नहीं थी। इसलिये उन्होंने गुरु नानक से अनुरोध किया कि उनके शरीर का इस तरह से अंतिम संस्कार किया जाये कि उनकी मृत्यु के बाद वहां कोई यादगार ना बन सके। मरदाना का मायने है जो कभी मरता नहीं। अपने नाम के मायने को सत्य सिद्ध करते हुये भाई मरदाना की विरासत गुरु नानक के अभिन्न संगी के तौर पर कायम है।

भाई मरदाना ने अपने सबदों में अपने रूहानी विवेक को भी गुरु नानक के नाम लगाया है। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज उनके सबदो में आता है,

गिआन गुड़ सालाह मंडे भउ मास आहार ॥
नानक इहु भोजन सच है सच नाम आधार ॥
काँयाँ लाहण आप मद अंमृत तिस की धार ॥
सतसंगत सिउ मेलाप होइ लिव कटोरी अंमृत भरी पी पी कटहि बिकार ॥
(राग बिहागड़ा, भाई मरदाना)

अपने रूहानी विवेक को गुड़ बनाओ, सलाहियत को अपनी रोटी बनाओ, और अपने गीज़ा के पतन के डर को आहार बनाओ।
नानक ने कहा कि वही ख़ुराक सच्ची है। सोच-विचार ही सच्चा और एकमात्र सहारा है।
मानव शरीर को आत्म-पहचान के अहसास का मिश्रण करने वाला कुंड बनाओ
ताकि विवेक रूपी अमृत पैदा हो सके।
रूहानी आरज़ूमंदों की संगत में विवेक के प्याले से अमृत पियो
ताकि विकार कट जायें।
(राग बिहागड़ा, भाई मरदाना)

भाई मरदाना कहते हैं कि अगर शरीर का इस्तेमाल आत्म-पहचान का मिश्रण करने वाले बर्तन के रूप में किया जाता है तो इससे अमृत रूपी घोल तैयार होता है। रूहानी आरज़ूमंदों का संग अमृत पैदा करता है जो मन के विकारों को काटने के लिये दरकार है।

खडूर साहिब के निवासी, भाई लहणा, ज्वाला जी के सालाना तीर्थ को जाते हुये कुछ दिनों के लिये रावी नदी के किनारे गुरु नानक के पास रहे। गुरु नानक के फ़लसफ़े ने उनका दिल छू लिया, इसलिये उन्होंने गुरु नानक के साथ रहने का फ़ैसला कर लिया। आने वाले दौर में, भाई लहणा ही दूसरे गुरु, गुरु अगंद के रूप में सामने आये।

गुरु नानक ने पंद्रह सौ पच्चीस ईस्वीं के शुरू में पंजाब के निकट-निकट वाले स्थानों की यात्रा की। इस उदासी के दौरान कुछ समय के लिये भाई लहणा भी उनके साथ थे। उन्होंने कथाला, अचल बटाला, किरी अफ़ग़ाना, सुल्तानपुर लोधी, सराय नागा और बीकानेर का सफ़र किया। करतारपुर से गुरु नानक और भाई लहणा ने कथाला का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम करतारपुर से कथाला जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: कथाला गांव में गुरु नानक की मुलाकात दो सूफ़ी फ़कीरों, पीर अब्दुल रहमान और मियां मिट्ठा सियाल से हुई। यह मियां मिट्ठा सियाल की समाधि है।

पीर अब्दुल रहमान और गुरु नानक ने सामाजिक नाबराबरी के बारे में गोष्ठी की।

इंडियन उप-महाद्वीप की उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे के दौरान इस इलाके की मुसलमान बिरादरी पाकिस्तान पलायन कर गई। इस स्थान का इंतज़ाम अब कथाला गांव की सिख और हिंदू बिरादरी करती है।

इस स्थान पर लोगों का जुड़ाव सामाजिक बंटवारे से अलग हट कर देखने की मानवीय क्षमता को दर्शाता है। हालांकि, एक साथ रहने के बावजूद समाज में संशय बना रहता है और मज़हबी जुड़ाव अपनी विशिष्ट पहचान और मान्यता के खो जाने के संशय को पालते हैं। गुरु नानक ने फ़रमाया कि ख़ौफ़ज़दा हो कर हम अकारण बहसों में पड़ते हैं और बेमायने टकराव में पड़ कर किसी मकसद के लिये बनी ज़िंदगी व्यर्थ बर्बाद करते हैं।

झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥

(राग सारंग, गुरु नानक)

बेकार बहसों, ग़ैर-ज़रूरी चिंताओं, विनाशकारी सोच और झगड़ों में पड़कर मन बेघर हो जाता है।
(राग सारंग, गुरु नानक)

कथाला गांव में गुरु नानक के आने की याद में गुरुद्वारा बनाया गया है।

पास के गांव जोड़ियां कलां में ओबारे ख़ान के साथ भी गुरु नानक ने इसी तरह से गोष्ठी की थी। ओबारे ख़ान के साथ मुलाकात की कोई निशानी नहीं है।

कथाला से गुरु नानक और भाई लहणा ने अचल बटाला का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम कथाला से अचल बटाला जा रहे हैं जो बटाला शहर से तकरीबन पांच किलोमीटर दूर है।

ऐतिहासिक तौर पर अचल बटाला प्राचीन अचलेश्वर मंदिर के लिये जाना जाता है, जो भगवान शिव के सबसे बड़े पुत्र कार्तिकेय को समर्पित है।

किस्सा यह है कि अपने छोटे भाई गणेश के साथ मुकाबला हारने के बाद कार्तिकेय ने इसी स्थान पर निवास किया था। 'अचलेश्वर' दो शब्दों से मिलकर बना है, 'अचल' का मायने है 'अटल' और 'ईश्वर' का मायने इलाही है।

भगवान शिव की अकीदत में हिंदू बिरादरी सालाना त्यौहार 'शिवरात्रि' के तौर पर मनाती है जिसका मायना 'शिव की रात' बनता है। यह त्यौहार सूर्यास्त से सूर्योदय तक मनाया जाता है जिसका मतलब है अज्ञानता के अंधेरे पर ज्ञान का उदय होना।

अमरदीप सिंह: शिवरात्रि के मौके पर गुरु नानक 'अचलेश्वर धाम' गये और भंगर नाथ जोगी के साथ रूहानी गोष्ठी की। भंगर नाथ जोगी 'गोरखनाथ' जमात के पैरोकार थे।

'जोगियों' की समझ थी कि एकांत में ब्रह्मचारी ज़िंदगी गुज़ारना, भिक्षा लेना और तप करना ही रूहानियत का एकमात्र रास्ता है। भंगर नाथ ने बयान दिया कि गुरु नानक का रुझान रूहानी है लेकिन उनका गृहस्थ ज़िंदगी गुज़ारने का फ़ैसला दूध में फिटकरी घोलने की तरह है जिससे दूध फट जाता है और पीने योग्य नहीं रहता। उनके मुताबिक परिवार में रहना सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के मार्ग में बाधक है। गुरु नानक ने जवाब दिया कि कुदरत के नियमों के मुताबिक पेड़ और जानवर एकांतवास नहीं करते और एक साथ रह कर दूसरी नस्लों के पालनहार बनते हैं। इसी तरिके से मनुष्य को अपने आसपास की बढ़ोतरी के लिये ज़िंदगी बढ़ाने की ज़रूरत है। गुरु नानक ने ज़िक्र किया कि ब्रह्मचारियों को ज़िंदगी के साथ उनके माता-पिता ने नवाजा है जो गृहस्थ जीवन गुज़ारते हैं। एक ओर ब्रह्मचारी गृहस्थों द्वारा दिये गये दान पर गुज़ारा करते हैं और दूसरे तरफ गृहस्थों को नालायक करार देते हैं। गुरु नानक ने उन्हें याद दिलाया कि वह 'शिव भगत' के रूप में भगवान शिव की अकीदत करते हैं जो पारिवारिक जीवन जीते थे। गुरु नानक ने गायन किया,

उजल कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मस ॥
धोतिआ जूठ न उतरै जे सउ धोवा तिस ॥१॥
सजण सेई नाल मै चलदिआ नाल चलंन ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंन ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

कांसा उजला और चमकदार है लेकिन जब इसको हवा लगती है तो कालिख़ सामने आ जाती है।
धोने से इसकी झूठ उतर नहीं जाती भले ही इसे सैकड़ों बार धोया जाये।
वह मेरे सज्जन हैं जो आत्म पड़ताल के मार्ग पर चलते हैं।
जब उनके कर्मों की पड़ताल की जाती है, तो उनका रूहानी रूतबा बुलंद होता है।
(राग सूही, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि कांसे का बर्तन चमकीला होता है लेकिन सीलन लगते ही काला हो जाता है। इसी तरह लोग दिव्यता में पहुंचे हुये लग सकते हैं लेकिन उनके विवेक उसी समय सामने आते हैं जब अलग-अलग हालात में विभिन्न लोगों के साथ उनके संवाद को देखा जाता है।

गुरु नानक के अचल बटाला में आने की याद में अचलेश्वर मंदिर के सामने गुरुद्वारा अचल साहिब बना हुआ है। इस गुरुद्वारे के लिये उन्नीसवीं सदी में महाराजा रणजीत सिंह ने जमीन दान में दी थी।

अचल बटाला से गुरु नानक और भाई लहणा ने कीड़ी अफ़ग़ाना का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम अचल बटाला से कीड़ी अफ़ग़ाना जा रहे हैं जो ब्यास नदी के पश्चिमी किनारे पर मौजूदा कस्बे श्री हरगोबिंदपुर के नज़दीक बसा हुआ है।

विलायतवाली जन्मसाखी' में गुरु नानक की कीड़ी अफ़ग़ाना में कुछ 'पठानों' के साथ गोष्ठी करने का ज़िक्र आता है पर किसी नाम का ज़िक्र नहीं आता। स्थानीय कथा के मुताबिक गुरु नानक से गोष्ठी करने वालों में एक पठान का नाम पीर दूलो शाह बताया जाता है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक की पीर दुल्लो शाह से मुलाकात कीड़ी अफ़ग़ाना में हुई जिसको कीड़ी पठाना भी कहा जाता है। माना जाता है कि यह पीर दुल्लो शाह की कब्र है।

मज़हब की बुनियाद पर उप-महाद्वीप की उन्नीस सौ सैंतालीस में हुये बंटवारे से स्थानीय मुसलमान आबादी यहां से पलायन कर गई। अब इस कब्र की देखरेख गांव वाले करते हैं।

'विलायतवाली जन्मसाखी' में दर्ज है कि गुरु नानक ने कीड़ी अफ़ग़ाना में शुकराने के महत्व पर ज़ोर दिया।

पाना वाड़ी होइ घर खर सार न जाणै ॥
रसीआ होवै मुसक का तब फूल पछाणै ॥
अपिउ पीवै जो नानका भ्रम भ्रम समावै ॥
सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पद पावै ॥
(राग तिलंग, गुरु नानक)

घर (चेतना) में पान की बेलें (विवेक) हो लेकिन गधा (अहंकार) इनका मोल नहीं पा सकता।
अगर कोई सुगंध का आनंद ले सकता है तब वह फूल की सच्ची सराहना कर सकता है।
नानक ने कहा कि रूहानियत का अमृत रस पीने वाला मनुष्य हर भ्रम और भटकाव से ऊपर उठ जाता है।
सहजता से सच्चाई की गहराई का अंदाज़ा लगता है और अमरता की प्राप्ति हो जाती है।
(राग तिलंग, गुरु नानक)

गधों में अपने आप को महफ़ूज़ रखने की प्रवृत्ति उन्हें अपरिचित स्थानों की सलाहियत करने से रोकती है। इस कारण उन्हें अड़ियल समझा जाता है। गुरु नानक ने गधे की मिसाल देते हुये समझाया कि जैसे गधा पान की बेलों का मूल्य नहीं जान सकता, उसी प्रकार मनुष्य की अड़ियल प्रवृति उसको अपने आस-पास के गुणों का आनंद लेने से रोकती है।

शुक्रगुज़ार होने से मनुष्य के सभी संदेह दूर हो जाते हैं और अमृत विवेक की रहमत होती है।

कीड़ी अफ़ग़ाना से गुरु नानक और भाई लहणा ने सुल्तानपुर लोधी की ओर सफ़र किया। उन्होंने ब्यास नदी में किश्ती के रास्ते दक्षिण की ओर का सफ़र किया और पूर्वी किनारे पर खडूर उतर गये। वहां से पैदल सुल्तानपुर लोधी गये जो वेईं नदी के किनारे पर बसा है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम कीड़ी अफ़ग़ाना से सुल्तानपुर लोधी जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई लहणा ने सुल्तानपुर लोधी में गुरु नानक की बहन, बेबे नानकी के साथ कुछ दिन गुज़ारे और दक्षिण की ओर मट्टे-दी-सराय नामक गांव की ओर बढ़े, जो मौजूदा दौर में सराय नागा के नाम से जाना जाता है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम मुक्तसर जिले के सराय नागा जा रहे हैं।

रौशनी की सराहना करने के लिये अंधेरे का तजुर्बा बहुत अहम है। गुरु नानक ने कई सालों के दौरान की गई अस्मरणीय उदासियों में बहुत कठिनाइयों का सामना किया। सैद्धांतिक रूहानी आरज़ू-मंद, करुणा से धड़कते दिल, विसतार से देखने वाली आंखें, धैर्य से भरपूर साहसी स्वभाव वाले गुरु नानक ने सभी मुसीबतों को अवसर के रूप में मान्यता दी, उन्होंने कहा कि ललकार बनने वाले हालात इलाज जैसे हैं और अनुकूल हालात बीमारी जैसे हैं क्योंकि सुख अपने-आप सीखने और विकास की ज़रूरत के राह में रोड़ा बनते हैं।

दुख दारू सुख रोग भइआ जा सुख ताम न होई ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

मुश्किल हालात दवा हैं और सांसारिक सुख रोग हैं। जहां सुख है वहां आत्म पड़ताल और प्रगति की इच्छा नहीं होती।
(राग आसा, गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा गुरु नानक के सराय नागा आने की याद में बनाया गया है।

अभिलाषी की तरक्की में संरक्षक का होना लाज़मी है। गुरु नानक के संरक्षक के तौर पर और भाई लहणा की अभिलाषी के तौर पर पवित्र सांझ तब्दीली के दौर में से निकल रही थी। रूहानी ज़िम्मेदारी को अगले हाथों में देने का समय नज़दीक आ रहा था। शाम और चढ़ते सूरज का माहौल चमत्कारी समय होता है जब आसमान चमक रहा होता है। शाम के वक्त सूरज छिपने लगता है जो बीते वक्त पर विचार करने का समय होता है और भोर के बाद सूरज चढ़ता है जो नई शुरुआत की हौसला-अफ़ज़ाई करता है। गुरु नानक कहते हैं,

गुरमुख जाग रहे चूकी अभिमानी राम ‖
अनदिन भोर भइआ साच समानी राम ‖
(गुरु नानक)

गुरुमुख इंसान जागे रहते हैं और अपना अभिमान मिटा देते हैं।
वह रोज़ाना 'भोर' के विनम्र पल में वास करते हैं ताकि जो कायनाती सच से रूबरू हो सकें।
(गुरु नानक)

सराय नागा से गुरु नानक ने भाई लहणा को करतारपुर वापिस आ कर इंतज़ाम देखने के लिये कहा और आप अगले सफ़र पर चल पड़े।

सराय नागा से गुरु नानक ने राजपूताना इलाके में बीकानेर का सफ़र किया।

गुरु विवेक का समुद्र है जो शाश्वत ज्ञान का दाता है।
मैं जिस तरफ भी देखता हूं, सब एक है और दूसरा कोई नहीं।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर सराये नागा से बीकानेर जा रहे हैं।

हे मां, अब तेरे लाल ने ज्ञान के समुद्र में डुबकी लगा ली है और वह विवेक के मोती हासिल करने के लिये दुनियादारी की लालसाओं से ऊपर उठ गया है।
ओ भाई, यह देश अजीब है, ओ मेरे गुरु, विवेक के बिना इसके रहस्यों को नहीं जाना जा सकता है। इसका राज़ कोई विवेकवान ही खोल सकता है।

बीकानेर इंडिया के राज्य राजस्थान में है जो पाकिस्तान की सरहद के नज़दीक है। इसका नाम इसके संस्थापक राव बीका के नाम पर पड़ा है जो राठौर वंश के मेवाड़ राज्य के राजा थे। उन्होंने पंद्रहवीं सदी में इस इलाके के किले में छोटी सी जगह बसाई थी। उस समय यह इलाका 'जंगलदेश' कहलाता था।

यह देश अजब है। विवेक के बिना कोई भी इसके रहस्यों को नहीं समझ सकता, हे मेरे गुरु।

अमरदीप सिंह: थार मरुस्थल के बीच में बीकानेर समृद्ध विरासत और सभ्यता का शहर है। जब गुरु नानक इस शहर में आये थे तो यह सौदागरों और तीर्थयात्रियों का केंद्र था क्योंकि यह मध्य एशिया के व्यापारिक रास्ते पर पड़ता था।

ऐतिहासिक तौर पर राजस्थानी तहज़ीब में कुदरत के तत्वों की पुजा होती थी। बाद में महाराष्ट्र के 'महानुभवी' और 'वरकरी पंथियों' द्वारा विष्णु मत का असर हुआ और विष्णु भगवान की पूजा होने लगी।

इस इलाके में जैन मत का भी असर हुआ। इसी कारण बीकानेर में विभिन्न रवायतों से जुड़े मंदिरों की दिलचस्प श्रृंखला है।

बीकानेर गांव में गुरु नानक की मुलाकात 'विष्णु मतियों' से हुई जो भगवान विष्णु के श्रद्धालु थे। ग्रामीणों ने पूछा कि अभिलाषी को इलाही से मिलाने वाले कई राह हैं परन्तु सबसे वाजिब राह कौन सा है। जवाब में गुरु नानक ने गायन किया,

रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥
वडै भाग सतिगुर मिलै पाईऐ पद निरबाणी ॥
मै ओल्लगीआ ओल्लगी हम छोरू थारे ॥
जिउ तूँ राखहि तिउ रहा मुख नाम हमारे ॥

(राग आसा, गुरु नानक)

मेरा ठाकुर ख़ूबसूरत है और उसके रूहानी बोल ख़ूबसूरत है।
सच्चा गुरु भाग्यशाली को मिलता है जो रौशनख़याली का मार्ग दर्शाता है।
मैं तो तेरे सबसे निचले नौकर का दास हूं। मैं एक विनम्र सेवक हूं।
तू जैसे रखे, मैं वैसे रहता हूं। मेरा चेहरा आत्म पड़ताल के पक्ष में है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि विनम्रता, सोच-विचार और कुदरत के नियम के मुताबिक जीने की राह सबसे अच्छा है।

बीकानेर के ही दूसरे गांव में 'विष्णु मतियों' के एक टोले ने गुरु नानक की मेज़बानी की। गोष्ठी के दौरान 'विष्णु मतियों' ने गुरु नानक से पूछा कि जन्म से लेकर मृत्यु के सफ़र में ज़िंदगी का बुनियादी मकसद क्या है। जवाब में गुरु नानक ने गायन किया,

अंधुले किआ पाइआ जग आइ ॥
राम रिदै नही गुर की सेवा चाले मूल गवाइ ॥
(राग भैरव, गुरु नानक)

हे अज्ञानी मनुष्य, तुमने इस संसार में क्या हासिल किया है?
तेरे हृदय में सृजनहार का सार नहीं बसा है और निस्वार्थ सेवा तेरी इच्छा नहीं है। जन्म का सत्य खो गया है।
(राग भैरव, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि मानव ज़िंदगी का बुनियादी मकसद वह विवेक हासिल करना है जो समूची कायनात की सर्जना को एक समझता है।

हम अब बीकानेर के बड़ा बाज़ार में अकीदत वाले एक स्थान पर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: 'नानकपंथियों' ने गुरु नानक के इस शहर में आने की याद में सभी मज़हबों के लिये यह साझा स्थान बनाया।

राजस्थान में सिंधी बिरादरी सत्यनारायण की श्रद्धालु है जो हिंदू पौराणिक कथाओं में इलाही का एक रूप है। इस के साथ ही सिंधी बिरादरी गुरु नानक की भी श्रद्धालु है। इस सत्य नारायण मंदिर में गुरु नानक और सत्य नारायण की पूजा की जाती है।

बीकानेर के बाहर कोलायत में हिन्दुओं का ऐतिहासिक तीर्थ स्थान है। कपिल सरोवर के तट पर बना मंदिर कपिल मुनि को समर्पित है जो पांच सौ ईसा पूर्व के प्राचीन ऋषि हैं। उन्हें सांख्य दर्शन का संस्थापक माना जाता है जो भारतीय दार्शनिक फ़लसफ़े के छह सिलसिलों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि कपिल मुनि ने इसी स्थान पर अपना शरीर छोड़ा था।

कपिल सरोवर के तट पर, गुरु नानक ने जैन बिरादरी के लोगों और संत कपिल के पैरोकारों से गोष्ठी की।

कपिल सरोवर के तट पर कोलायत में यह गुरुद्वारा गुरु नानक के इस जगह पर आने की याद में बनाया गया।

जैनी श्रद्धालुओं ने अपने संदेहवादी फ़लसफ़े की बात की जो परमात्मा के होने या नहीं होने के बारे में किसी तरह की राय ना होने का दावा करती है। कपिल मुनि के पैरोकारों ने 'सांखय' फ़लसफ़े का वर्णन किया जो सर्जना के दो स्वतंत्र पहलुओं के बारे में शिक्षा देता है; 'पुरुष' निरोल चेतना और 'प्रकृति' भौतिक पदार्थ है। गुरु नानक ने वहदत के बारे अपनी सोच का इज़हार 'कर्ता पुरख' के लफ़्ज़ों के साथ किया कि 'कर्ता' ही सृजनहार के तौर पर पदार्थ के रूप में ज़ाहिर होता है। 'कर्ता पुरख' और 'पुरुष' एक ही हैं जो इलाही चेतना है। गुरु नानक ने गायन किया,

सरबे जोइ अगछमी दूख घनेरो आथि ॥
कालर लादस सर लाघणउ लाभ न पूँजी साथ ॥
पूँजी साचउ नाम तू अखुटउ दरब अपार ॥
नानक वखर निरमलउ धंन साहु वापार ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

अविनाशी हाज़रा-हज़ूर के हर जगह दर्शन करो। पदार्थ के साथ जुड़ाव से दुख उपजता है।
तू नकारात्मक सोच से भर कर दुनियावी समुद्र पार करने का उपाय करता है जिस कारण कोई पूंजी तेरे साथ नहीं जाएगी।

आत्म पड़ताल ही सच्ची पूंजी है। यह दौलत अमूक और अनंत है।
नानक ने कहा कि यह वस्तु निर्मल है। वह साहूकार धन्य है जो इस वस्तु का व्यापार करता है।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि मानव ज़िंदगी का बुनियादी मकसद कुदरत के शाश्वत अस्तित्व और सर्जना की हाज़रा-हज़ूरी है।

इंडिया के राजस्थान और पाकिस्तान के सिंध में फैले रेगिस्तान को 'मारू' कहा जाता है। इस शब्द का नाता खुश्क, सूखे, रेतीले और तूफ़ानी हवाओं वाले माहौल से है। रूहानी आरज़ूमंदों की परंपरा में, 'मारु' का अर्थ मन की वह हालत है जिसमें विवेक होने के बावजूद आत्म-प्रतिबिंब का सूखा होता है, इसलिये मनुष्य चेतना की बारिश से वंचित रहता है।

संगीत श्रोताओं में कई हमदिली के जज़्बात जगाती है। इस सूखाग्रस्त 'मारु' इलाके में सफ़र करते हुये मेरा 'मारु' मन गुरु नानक के माझ राग में डूब जाता है। राग माझ संगीत का बुनियादी ढांचा है जो बैराग और बिछोड़े के दर्द पर काबू पाने के बाद इलाही के साथ मेल की उम्मीद जगाता है।

मारू मीहि न तृपतिआ अगी लहै न भुख ॥
राजा राज न तृपतिआ साइर भरे किसुक ॥
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

रेगिस्तान बारिश से संतुष्ट नहीं होता और लालसा से आग नहीं बुझती।
राजा राज से तृप्त नहीं होता। समुद्र का पानी कभी बहता नहीं।
नानक ने कहा कि सच्चे विवेक की अभिलाषा कभी तृप्त नहीं होनी चाहिये।
(राग माझ, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २३: गुरु चेला (मुर्शद और अभिलाषी)

यह एपिसोड उन प्रमुख चर्चा बिंदुओं को उजागर करता है जो गुरु नानक के जीवन और उनकी रुहानी समझ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दार्शनिक गहराई की खोज के लिए एक प्रभावशाली ढांचा बनाते हैं। करतारपुर में समुदाय की स्थापना की उनकी दृष्टि, विभिन्न धार्मिक परंपराओं के साथ उनके संबंध, और भाई मरदाना व भाई लहणा के साथ उनके रिश्तों की समीक्षा करके, हम देख सकते हैं कि गुरु नानक का दर्शन किस प्रकार दैनिक जीवन में व्यावहारिक रूप में सामने आया। यह दार्शनिक खोज उनके मूल सिद्धांतों, रुहानी मार्गदर्शन प्राप्त करने के नवोन्मेषी दृष्टिकोणों, संतुलित जीवन जीने के प्रबंधन, और एकेश्वरवाद की बजाय अद्वैतवाद में निहित उनके सार्वभौमिक दृष्टिकोण की गहराई में जाती है। उत्तरी भारत और पाकिस्तान में फैले ऐतिहासिक स्थल, जो उनकी विरासत को समर्पित हैं, उनके सफ़र और दर्शन के स्थायी प्रभाव की गवाही देते हैं, भले ही हाल की राजनीतिक सीमाओं ने उन्हें प्रभावित किया हो। ये चर्चाएं दिखाती हैं कि गुरु नानक का समग्र दृष्टिकोण किस प्रकार रुहानी बुद्धि को व्यावहारिक जीवन से जोड़ता है और आज के जीवन में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। गुरु नानक की बुद्धिमत्ता को अपनाना आज हमारे जीवन को समृद्ध कर सकता है और एकता व रुहानियत की गहरी समझ को प्रेरित कर सकता है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक के जीवन में करतारपुर का क्या महत्व था, और यह बस्ती उनकी सौहार्दपूर्ण, विविधता से भरपूर समुदाय की दृष्टि को कैसे मूर्त रूप देती है?

विभिन्न दूरस्थ स्थलों की वर्षों की महत्वपूर्ण यात्राओं के बाद, गुरु नानक ने रावी नदी के किनारे एक शांत स्थान को चुना, जिसे पहले जम्मनवाली के नाम से जाना जाता था और बाद में करतारपुर नाम दिया गया। इस शांत वातावरण में उन्होंने अपने जीवन के अंतिम अठारह वर्ष एक किसान के रूप में बिताए, अपने परिवार की देखभाल करते हुए समुदाय के लाभ के लिए अपने अनुभवजन्य ज्ञान को साझा किया। यह बस्ती व्यावहारिक रूप से गुरु नानक के समुदायिक जीवन और रुहानी अभ्यास के सिद्धांत को कैसे दर्शाती है?

२. अपनी यात्राओं के दौरान गुरु नानक की विभिन्न धार्मिक समुदायों के साथ बातचीत ने उनकी अद्वितीय अंतर-धार्मिक दर्शन को कैसे गहराई और समृद्धि दी?

यह एपिसोड विभिन्न परंपराओं के धार्मिक व्यक्तियों के साथ गुरु नानक की मुलाक़ातों को उजागर करता है, जिनमें कठाला में सूफ़ी फकीर पीर अब्दुल रहमान और मियां मिट्ठा सियाल, अचल बटाला में योगी भंगर नाथ, बीकानेर में वैष्णव जन और कोलायत में जैन श्रद्धालु शामिल हैं। ये बातचीत गुरु नानक के अंतर-धार्मिक वार्तालाप के दृष्टिकोण और विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों से सम्मानपूर्वक जुड़ने की उनकी क्षमता के बारे में क्या दर्शाती हैं?

३. गुरु नानक की यात्रा में भाई मरदाना की क्या भूमिका रही, और उनकी विरासत को कैसे संजोया गया है?

गुरु नानक की यात्राओं में भाई मरदाना ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 'संगत' (समुदाय) का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका अटूट समर्थन एकता के शक्तिशाली संदेश को फैलाने में सहायक रहा। उनकी यह इच्छा थी कि उनके निधन के बाद उनके नाम पर कोई स्मारक न बने, फिर भी गुरु ग्रंथ साहिब में उनके द्वारा योगदान दिए गए सबदों के माध्यम से उनका प्रभाव आज भी बना हुआ है। गुरु नानक के साथ भाई मरदाना का संबंध रुहानी साथ की अवधारणा को कैसे दर्शाता है?

४. गुरु नानक और भाई लहणा के बीच संबंध कैसे विकसित हुआ, और यह रुहानी उत्तराधिकार के बारे में क्या दर्शाता है?

खडूर गांव के एक समर्पित निवासी भाई लहणा, एक वार्षिक तीर्थ यात्रा के दौरान गुरु नानक से मिले। गुरु नानक के गहरे दर्शन से तुरंत प्रभावित होकर उन्होंने उनके साथ रहने का निर्णय लिया। जैसे-जैसे उनका संबंध मजबूत हुआ, भाई लहणा को 'गुरु अंगद' की सम्मानजनक उपाधि प्राप्त हुई। यह एपिसोड गुरु नानक को मार्गदर्शक और भाई लहणा को साधक के रूप में एक रुहानी संबंध को उजागर करता है। यह परिवर्तन गुरु नानक की मार्गदर्शन पद्धति और उनकी समस्त सृष्टि की एकता की दृष्टि को आगे बढ़ाने के तरीके के बारे में क्या प्रकट करता है?

५. एपिसोड में उल्लिखित ऐतिहासिक स्थल गुरु नानक की विरासत को कैसे संरक्षित और स्मरण करते हैं?

यह एपिसोड उत्तरी भारत में गुरु नानक की यात्राओं की स्मृति में बनाए गए कई गुरुद्वारों और स्मारकों को उजागर करता है। इनमें गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक, गुरुद्वारा चोला साहिब, गुरुद्वारा अचल साहिब और बीकानेर का समन्वित धार्मिक स्थल शामिल हैं। ये स्थल गुरु नानक के प्रभाव के भौगोलिक विस्तार और विभिन्न संस्कृतियों में उनके दर्शन के प्रति फैले व्यापक सम्मान को कैसे दर्शाते हैं?

६. १९४७ का विभाजन गुरु नानक से जुड़े ऐतिहासिक भूगोल को कैसे प्रभावित और पुनर्गठित करता है?

एपिसोड में कहा गया है कि रावी नदी के पूर्व और पश्चिम में फैला यह समरूप क्षेत्र १९४७ में भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन में रैडक्लिफ रेखा द्वारा विभाजित हो गया, जिसमें पाखोके रंधावा भारत का हिस्सा बना और करतारपुर पाकिस्तान का। इस विभाजन ने गुरु नानक की विरासत की निरंतरता को कैसे प्रभावित किया, और २०१९ में करतारपुर कॉरिडोर की स्थापना इन ऐतिहासिक रूप से जुड़े स्थानों को फिर से जोड़ने के लिए क्या महत्व रखती है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक के तीन मूल सिद्धांत उनके सामाजिक दर्शन की नींव कैसे बनाते हैं?

एपिसोड गुरु नानक के तीन मूल सिद्धांतों को 'किरत करो', 'वंड छको', और 'नाम जपो' के रूप में पहचानता है। 'किरत करो' का अर्थ है स्वयं और दूसरों के लाभ के लिए ईमानदारी से जीविका कमाना, 'वंड छको' का अर्थ है "अपनी अर्जित वस्तुओं को, चाहे भौतिक हों या रुहानी, दूसरों के साथ बांटना और मिलकर उपभोग करना," और 'नाम जपो' वह प्रक्रिया है जिसमें 'आत्मचिंतन' के माध्यम से आत्मिक और सामाजिक विकास होता है। ये सिद्धांत मिलकर उस ढांचे पर आधारित एक सौहार्दपूर्ण समुदाय की रचना कैसे करते हैं जो रुहानी और आर्थिक प्रगति को प्रोत्साहित करता है?

२. गुरु नानक का ज्ञान और शिष्यत्व के संबंध का दृष्टिकोण उनके रुहानी मार्गदर्शन के विचार के बारे में क्या प्रकट करता है?

जब गुरु नानक से उनके गुरु के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, "ज्ञान के शब्द ही गुरु हैं, और सजग आत्मचिंतन ही शिष्य है।" यह कथन पारंपरिक रुहानी सत्ता और मार्गदर्शन की अवधारणाओं को कैसे पुनर्परिभाषित करता है? यह ज्ञान के स्रोत और उसके संप्रेषण को समझने के लिए क्या संकेत देता है?

३. गुरु नानक ने सन्यास परंपराओं को किस प्रकार चुनौती दी और एक ऐसे जीवन की वकालत की जो रुहानी जुड़ाव और संसार से संबंध को अपनाता है?

अचल बटाला में, गुरु नानक की भेंट भंगर नाथ जोगी से हुई, जो मानते थे कि ब्रह्मचर्य, भिक्षाटन और तपस्या से युक्त एकांत जीवन ही रुहानी उपलब्धि का एकमात्र मार्ग है। गुरु नानक ने इस दृष्टिकोण को यह कहकर चुनौती दी कि प्रकृति के नियमों के अनुसार, वनस्पतियाँ और जीव-जंतु एकांत नहीं चुनते, बल्कि वे एक-दूसरे के साथ मिलकर सह-अस्तित्व में रहते हैं और अन्य प्रजातियों के लिए उपयोगी होते

हैं। उन्होंने यह भी स्मरण कराया कि जिन्हें वे शिव मानते हैं, उन्होंने भी पारिवारिक जीवन जिया। गुरु नानक की गृहस्थ रुहानियत की यह रक्षा पारंपरिक धार्मिक द्वैत को कैसे चुनौती देती है?

४. गुरु नानक ने मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य के रूप में क्या पहचाना?

जब बीकानेर के वैष्णव जनों ने गुरु नानक से जन्म और मृत्यु के बीच मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य के बारे में पूछा, तो उन्होंने एक सबद के माध्यम से उत्तर दिया जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि यदि कोई अपने हृदय में सृजनहार की अनुभूति नहीं करता और निःस्वार्थ सेवा में नहीं लगता, तो जन्म का महत्व फीका पड़ जाता है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य ज्ञान प्राप्त करना है, जो हमें समस्त सृष्टि को एक परम शक्ति के भाग के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। यह दृष्टिकोण उनके मानव उद्देश्य और रुहानी पूर्ति की समझ को कैसे आकार देता है?

५. गुरु नानक की 'कर्ता पुरख' की अवधारणा किस प्रकार प्रकृति के द्वैतवाद से भिन्न एक अद्वैत दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है?

कोलायत में कपिल मुनि के अनुयायियों के साथ वार्तालाप के दौरान, गुरु नानक ने 'सांख्य' दर्शन का सामना किया, जो यह बताता है कि सृष्टि दो स्वतंत्र तत्वों से बनी है: 'पुरुष', जो शुद्ध चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, और 'प्रकृति', जो भौतिक पदार्थ का। इस द्वैत के उत्तर में, गुरु नानक ने अद्वैत के अपने विचार प्रस्तुत करते हुए 'कर्ता पुरख' की संकल्पना दी। उन्होंने सुझाव दिया कि 'कर्ता', जो पदार्थ में प्रकट सृजनहार है, वही 'पुरख' है — दिव्य चेतना या 'पुरुष'। चेतना और पदार्थ के बीच संबंध को समझने के लिए इस एकीकृत सृष्टि की दृष्टि के क्या निहितार्थ हैं?

६. गुरु नानक के कृतज्ञता और विपत्ति पर आधारित सूझबूझ भरे सबद हमारे जीवन की चुनौतियों और प्रशंसा की भावना की समझ को कैसे परिवर्तित करते हैं?

एपिसोड में गुरु नानक के कई सबद प्रस्तुत हैं जो चुनौतियों के मूल्य और कृतज्ञता के महत्व को उजागर करते हैं। एक सबद में वे कहते हैं, "विपत्ति औषधि है, और भोग रोग हैं।" वे यह समझाते हैं कि जहाँ सुख है, वहाँ आत्मचिंतन और व्यक्तिगत विकास की इच्छा नहीं हो सकती। एक अन्य सबद में वे सुपारी के पेड़ की प्रशंसा न कर पाने वाले गधे की उपमा देते हैं, यह दर्शाने के लिए कि कृतज्ञता की कमी हमारे आसपास की अच्छाइयों का आनंद लेने की क्षमता को कैसे बाधित करती है। ये अंतर्दृष्टियाँ जीवन की कठिनाइयों और प्रशंसा की महत्ता की हमारी समझ को कैसे नया रूप देती हैं?